आज की मुरली का सार ---------- Date: 08-06-2014

बापदादा द्वारा हरेक बच्चे की जैसी याद वैसा रिटर्न उसी समय मिल जाता हैं. जिस रूप से जो याद करता हैं उसी रूप से बापदादा बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हो ही जाता हैं जो योगी तू आत्मा हैं उसे योग की विधि मिल जाती हैं. जबकि बाप हैं ही बच्चों के प्रति, जब तक बच्चों के स्थापना के कर्तव्य का पार्ट हैं तब तक बापदादा बच्चों के हर संकल्प और सेकेण्ड में साथ-साथ हैं.

जैसे बच्चे भी सेवा-स्थान चेन्ज करते हैं ना, तो ब्रह्मा बाप ने भी सेवा-स्थान (साकार से अव्यक्त वतन) चेन्ज किया हैं. रुप वही और सेवा वही हैं. हजार भुजावाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा हैं तब तो साकार सृष्टि में इस रूप का गायन और यादगार हैं.

जैसे आत्मा के बिना भुजा कुछ नहीं कर सकती वैसे बापदादा कम्बाइन्ड रुप की सोल के बिना भुजाएं रूपी बच्चे क्या कर सकते हैं. हर कर्तव्य में अन्त तक पहले कार्य का हिस्सा ब्रह्मा का ही होता हैं. ब्रह्मा अर्थात आदि देव. आदि देव अर्थात हर शुभ कार्य की आदि करने वाला.

ब्रह्मा बाप से स्नेह हे, तो स्नेह का रिटर्न हे, जैसे बाप ने सेवा की स्पीड़ को तीव्रगति देने के लिए सिर्फ स्थान परिवर्तन किया हैं ऐसे ही बच्चों को भी बाप समान सेवा की गति तीव्र बनाने में बीजी रहना चाहिए. बाप से स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप सेवा से स्नेह हैं. जैसे पल-पल बाबा-बाबा कहते हो वैसे हर पल बाप और सेवा हो तब ही सेवा का कार्य समाप्त होगा और साथ चलेंगे.

बाबा बच्चों में अब लाइट, माइट और माइक तीनों ही रूप में पावरफुल स्टेज में देखना चाहते हैं. माइक तो पावरफुल हो गए हैं. लेकिन अब लाइट और माइट की ऐसी पावरफुल स्टेज बनाओ जिस स्टेज से हर आत्मा को शांति, सुख और पवित्रता की तीनों ही लाइट्स अपने माइट से दे सको. स्थूल लाइट आंखों से देखते रुहानी लाइट अनुभव से जानेंगे. वर्तमान समय इस रुहानी लाइटस द्वारा वायुमण्डल परिवर्तन करने की सेवा हैं. ॐ शांति.